॥ श्रीः ॥

महाराणायशप्रकाश ।

'मलसीसर' ठाकुर भूरसिंह शेखावत संगृहीत ।

राज्य जयपुर.

विक्रम संवत् १९६६, सन् १९०९ ई.

श्रीवेङ्कटेश्वर (स्टीम्) प्रेस-

बंबई.

श्रीमान् यावदार्यकुलकमलदिवाकर महाराणा
श्री १०८ श्री प्रतापसिंहजी ।



यह उनही अद्वितीय वीरशिरोमणिका चित्र है जिनको सद्गुणोंके
कारण कलियुगके रामचन्द्र कहकर रट सकते हैं

ओ३म्.

भूमिका।

यह जगद्विख्यात और सुप्रसिद्ध है कि इस आर्यभूमिके निवासियोंका व्यवहार वर्णाश्रमधर्मकी प्रणालीके अनुसार रहाहै। महाराज मनु और भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने जो वर्णाश्रमधर्मकी आज्ञा की और उसका जबतक पालन होता रहा भारतवासियोंने परम गौरव और उत्कर्ष पाया। परन्तु महाभारतके पश्चात् शृङ्खलाबद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थोंके न मिलनेसे यह तो नहीं कहाजासकता कि यहांका राज्यशासन किस क्रमसे रहा, किन्तु जैन और बौद्ध धर्मका प्रचार होनेसे वर्णाश्रमधर्मकी बहुत क्षति हुई जिस पर श्रीशङ्कराचार्य भगवान्ने (जिनके निरुपम विज्ञानका प्रभाव अद्यावधि जागरूक है) उक्त धर्मका जीर्णोद्धार किया। उसके अनन्तर दुर्भाग्यवश शीघ्रही यवनराज्यका प्रादुर्भाव हुआ, जिसके हृदयविदारक अनाचारोंका स्मरण आनेसे सहसा रोमाञ्च होआते हैं। प्रायः इसही कालमें वर्णाश्रमधर्मकी व्यवस्था अत्यन्त शोचनीय दशाको प्राप्त होगई। परन्तु प्रसिद्ध है कि "निर्वीज भूमि कबहू न होय" इसके अनुसार सीसोदवंशोद्भव श्रीमान् महाराणा "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" (अपने धर्ममें रहकर प्राण त्यागना भी अच्छा होताहै परन्तु अन्य धर्मका स्वीकार करना बडा भयङ्कर है) इस नियम पर कटिबद्ध हुए जिससे आर्यमात्रको और विशेष कर क्षत्रियोंको

बडा अभिमान है कि महाराणाओंने आर्योंके वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करके सच्चे क्षात्रधर्मका गौरव रक्खा ।

धन्य है सीसोदियोंके वंशको जिसमें बडे २ धर्माभिमानी वीरपुङ्गवोंका जन्म हुआहै कि, जिनके वीरचरित यावच्चन्द्र-दिवाकर संसारमें स्थायी होगये हैं । अत एव मैंने बहुत कालसे महाराणाओंके सम्बन्धमें जो फुटकर, चमत्कारी काव्य मिले उनका धीरे २ संग्रह किया, और इनकी अधिक प्रतियां होजायं तो बहुत अच्छाहो यह विचार कर "महा-राणायशप्रकाश" के नामसे पुस्तकाकार छपवा कर विद्वानोंकी सेवामें उपस्थित कियाहै । यद्यपि मेदपाटेश्वरोंका यश समुद्ररूप है और मेरा उसके संग्रह करनेमें प्रवृत्त होना समुद्रको अञ्जलिद्वारा ग्रहण करनेकी भांति परिहासास्पद साहस है क्योंकि महाराणाओंके यशका भलेप्रकार वर्णन करना तो सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक मान्यवर कर्नल जेम्स टॉड साहब तथा राजपूतानाके भूषण कविवर मिश्रण ठाकुर सूर्यमल्लजी जैसेही विद्वानोंकी लेखनीका सामर्थ्य है कि जिन्होंने टाडराजस्थान और वंशभास्कर नामके बृहत् इतिहास ग्रन्थ निर्माण कर देशभरका उपकार कियाहै । परन्तु मेरा अभिप्राय इस संग्रहसे यह है कि जो चमत्कारी काव्य अबतक उपलब्ध हुए हैं उनका किसी बडे ऐतिहासिक ग्रन्थमें संयुक्त न होनेके कारण समयके फेरफारसे लुप्त होनेका संदेह है । आशाहै कि मेरा यह व्यवसाय विद्वानोंको अरुचि कर न होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा ।

आगे मैं इस अवसर पर प्रथम ही प्रथम न्यायकारी और दयालु ब्रिटिश गवर्नमेंटका अन्तःकरणसे धन्यवाद करताहूं

कि जिसके शान्तिमय और न्यायपरायण राज्यशासनमें भारतवासियोंको असीम सुख प्राप्त होरहा है जो जगद्विख्यात है। यवनराज्यके पश्चात् जो उपद्रव मरहटों और मीरखां आदि उपद्रवीलोगोंसे भारतवर्ष व राजपूतानेमें हुआ कि जिसके स्मरणमात्रसे भी अत्यन्त संताप होताहै। परन्तु हमारे देशके अहोभाग्य थे जो उन देशनाशकोंके अन्यायसे बचानेके निमित्त परमेश्वरने यहां दयालु गवर्नमेंट ब्रिटानियाका राज्यशासन जमाया जिसका विशेष वृत्तान्त लिखा जाय तो एक पृथक् पुस्तक बन सकती है। राजपूतानेका कौन मनुष्य होगा जो परमदयालु गवर्नमेंट ब्रिटानियाके उपकारोंका स्मरण करता हुआ अपने अन्तःकरणसे परमेश्वरसे यह प्रार्थना न करे कि गवर्नमेंट ब्रिटानियाका धर्मराज्य सदैव वृद्धिको प्राप्त हो। गवर्नमेंट ब्रिटानियाने हमारी प्राचीन और पवित्र राजधानी मेवाड़को मरहठोंके उपद्रवसे बचाकर जो अप्रतिम सहानुभूति की उसका वृत्तान्त बहुतही कृतज्ञताके साथ वर्णन करने योग्यहै जैसा कि टाडराजस्थान आदिमें उल्लेख किया गया है। पश्चात् बहुत प्रसन्नता और कृतज्ञताके साथ कर्नल जेम्स टॉड साहबका धन्यवाद करताहूं कि जिन्होंने 'टाडराजस्थान' नामका बृहत् इतिहास लिखकर क्षत्रियमात्रके साथ अनुपम सहानुभूति की जिससे राजपूतानेका परम उपकार हुआहै। यदि उक्त महानुभावका अतुल परिश्रम न होता तो कब सम्भव था कि हम लोग अपने पूर्वजोंके इतिहाससे अभिज्ञ होते। यह टाड महोदयके ही प्रशंसनीय उद्योगका फल है कि मेवाड़का इतिहास सर्वसाधारणको ज्ञात हुआ और सब लोग महाराणाओंके गौरवसे परिचित हुए। ऐसे सुयोग्य और महान् पुरुषका परिश्रम संसारमें सर्वदा प्रशंसनीय रहेगा।

अब मैं उन महोदयोंका धन्यवाद करताहूं कि जिनसे मुझे इस महाराणा यशप्रकाशके सम्पादनमें सहायता मिली—

(१) बारहठ रामनाथजी रत्नू मैम्बर कौंनसिल रियासत किशनगढ़ कि जो राजपूतानेके इतिहास रचयिता प्रख्यातहैं। कालान्तरमें इन्हींकी अमृतवाणीसे टाड साहबका बृहत इतिहास वा अन्य अन्य मेवाड़के इतिहासकी कथाएँ कि जो इन्हें उपस्थित हैं सुन २ कर मेरे हृदयमें यह अङ्कुर पैदा हुआ था कि सूर्यवंशकी प्रतिष्ठा रखनेवाले महाराणाओंका काव्यरूप सुयश संग्रह करना चाहिये ।

(२) श्रीमान् स्वर्गवासी स्वामी गणेशपुरीजी महाराजकी जो राजपुतानेमें साहित्यशास्त्रके सुप्रसिद्ध विद्वान् थे और राजधानी मेवाड़में बहुत कालतक रहनेका संयोग हुआथा, उनके मुखारविन्दसे भी अनेक कथाएँ सुनी और उनके बनाये हुए काव्यभी मिले जो महाराणायशप्रकाशमें यथास्थान लिखे गये हैं ।

(३) पंडित गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा कि जो इस समय इतिहास वेत्ताओंमें अग्रगण्य हैं। इन्होंने कृपा करके समय समय पर बहुत सहायता दीहै ।

(४) कविराजा भैरूंदानजी बीकानेर जिनसे कि महाराज पृथ्वीराजजी (जो बीकानेर महाराज रायसिंहजीके कनिष्ठ भ्राता हुएहैं और बडे विद्वान् व अद्वितीय सहानुभूति करने वाले तथा प्रसिद्ध ईश्वरभक्त थे जिनको सद्गुणोंके कारण क्षत्रियोंके शिरोमणि कहने चाहिये) का रचाहुआ एक गीत और कुछ दोहे मिले कि जो अद्वितीय हैं ।

(५) कविराजा मुरारीदानजी आशिया महामहोपाध्याय जोधपुर कि जो इस समय राजपूतानेमें वास्तवमें कविराजा पद को सार्थक करनेवाले हैं, उनसे भी कुछ काव्य मिले और उनके अल्प कालके उपदेशसे मुझे इस संग्रहके लिये बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ।

(६) बारहठ कृष्णसिंहजी सोदा एक बहुत प्रशंसनीय विद्वान् और मुझपर बडी कृपा रखनेवाले थे। उनसे प्रायः प्राचीन गीत मिले और उन्होंने स्वयं परिश्रम करके इस पुस्तकके सम्पादनमें सहायता दी जिसका मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं दैववश वे इस पुस्तकको मुद्रित नहीं देखसके।

(७) महियारिया मोड़सिंहजी उदयपुर निवासी इन्होंने भी बहुत उत्तम २ काव्य देकर बहुत रुचिसे मुझे कृतार्थ किया।

(८) उज्वल फतहकरणजी जो चारण सरदारोंमें उत्तम विद्वान् हैं अपनी रची काव्य वा अन्य प्रकारकी कथाओंसे स्नेहपूर्वक सहानुभूति की।

(९) कवि ऊमरदानजी 'विरुद छिहत्तरी' प्रथम उन्हीके परिश्रमसे प्राप्त हुई कि जिसको सिंघी बच्छराजजी पहले छपवा भी चुके हैं। उस पुस्तकमें भावार्थका उल्लेख नहीं किया गया था इस लिये भावार्थ सहित महाराणायशप्रकाशमें पुनः छपवाना उचित समझा गया।

(१०) युकतीदानजी देथा व हिंगलाजदानजी कवियाने भी स्वयं रचित काव्य देनेसे मेरे अभिप्रायको संतुष्ट किया।

(११) मुन्शी समर्थदानजी मालिक राजस्थान यन्त्रालय अजमेर कि जिनसे इस ग्रन्थके संग्रहमें सहायता मिली।

मैं उन्हींके प्रेसमें इस ग्रन्थके छपानेका अभिलाषी था और वे रुचिपूर्वक इस ग्रन्थकी छपाईके सुधार करनेमें सन्नद्ध थे परन्तु संयोग वश उनके शरीरमें अस्वस्थता होनेपर "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेस बम्बईमें इस ग्रन्थके छपानेका प्रयत्न किया कि जहां सेठ खेमराजजीने बहुत प्रीतिपूर्वक पुस्तकको पूर्णताको पहुंचाया।

(१२) बारहठ बालाबक्सजी पालावत हणूत्या ग्राम-निवासीने इस पुस्तकको शुद्ध करने वा काव्योंका भावार्थ लिखानेमें बहुतही दत्तचित्त होकर परिश्रम किया कि जिससे सर्वसाधारणके समझनेमें बडा उपयोग होगा इनके परिश्रमका मैं बहुत आभारी हूं।

(१३) साहित्यशास्त्री पण्डित माधवप्रसादजी गौड़ जैपुरनिवासी जिन्होंने बारहठजीकी सम्मतिसे रुचिपूर्वक इस कार्यमें परिश्रम करके इसको सफलता पर पहुंचाया।

जो जो काव्य रुचिकर हुए मैंने संग्रह किये हैं और जहां तक होसका सर्वसाधारणके समझनेके लिये उनका अर्थ भी लिखा गया है परन्तु मेरा यह विचार कदापि नहीं है कि इसमें कोई त्रुटि न हो प्रत्युत मैं सर्व विद्वज्जनोंसे प्रार्थना करताहूं कि जहां कहीं किसी प्रकारकी अशुद्धि वा भूल हो उसे सुधारेंगे तो मैं अत्यन्त कृतज्ञ होऊंगा।

सब सज्जनोंका कृपाभिलाषी—

भूरसिंह शेखावत,

मलसीसर राज्य—जयपुर.

विशेष द्रष्टव्य।

(१) इस पुस्तकमें प्रथम महाराणाओंका वंशक्रमानुसार संक्षिप्त वृत्तान्त लिखा गया है और आगे जिन २ महाराणाओंके काव्य मिले उन काव्योंकी स्थिति है। एवं जिन काव्योंके सम्बन्धमें विशेष लिखना आवश्यक समझा गया उनके नीचे आवश्यक विषय नोट किये गये हैं। नोटोंके नीचे सर्वसाधारणके सुबीतेके लिये काव्योंका भावार्थ भी संयुक्त किया है।

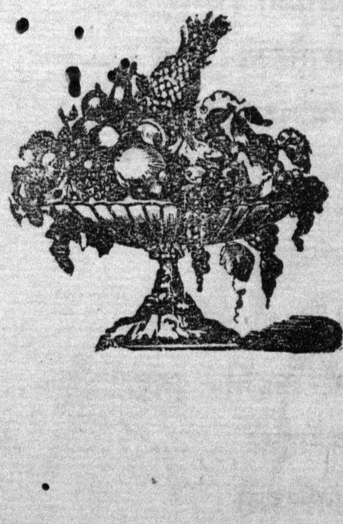
(२) 'डिंगल' भाषामें ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, औ ये स्वर नहीं होते। और (श) तालव्य तथा (ष) मूर्धन्यके स्थानमें दन्त्य सकारही लिखा जाताहै। इसी प्रकार 'ख' के स्थानमें 'ष' और अनुस्वारका अनुस्वारही रहताहै परसवर्ण वा अनुनासिक (अर्धानुस्वार) नहीं होता।

इस पुस्तकमें प्रायः डिंगल भाषाकी कविता आई है इस लिये डिंगल कविताओंका लेख उक्त नियमानुसारही किया गया है परन्तु छन्दोभङ्गके भयसे कहीं २ लघु अक्षरपरके अनुस्वारको ँ अर्धानुस्वार बना दियाहै।

यह फेरफार डिंगलके नियमोंके अनुरोधसे करना पड़ाहै सो पाठकगण उन २ स्थलोंपर अशुद्ध न समझें।

सूचीपत्र।

इति शम् ।



इति

अनुक्रमणिका

समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

महाराणा-यशप्रकाश।

मङ्गलाचरण।

सोरठा।

जिहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवरवदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुन सदन॥१॥
मूक होइ वाचाल, पंगु चढइ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सु दयाल, द्रवहु सकल कलिमलदहन २॥

[गोस्वामी तुलसीदासजी.]

दोहा।

अङ्ग भसम, अरधँग उमा, शीश गङ्ग, शशिलेश।
रिपु अनङ्ग, मङ्गल करन, एकलिङ्ग आदेश॥३॥

[बारहठजी बालाबख्शजी.]

वह सूर्यवंश परम धन्यहै जिसमें महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्र जैसे मर्यादापुरुषोत्तमका अवतार हुआहै। उन्हीं महाराजा रामचन्द्रके पुत्र कुश और लवकी वंशपरम्परामें राठौड़, कछवाहे और सीसोदिये नामके ३ वंश वर्त्तमानमें सुप्रसिद्धहैं। (कितनेही विद्वानोंका मतहै कि अयोध्याके अन्तिम राजा सुमित्रसे यह उक्त वंश विभाग हुआहै) जिनमें महाराणा साहबका यह वंश

लवसे प्रचलितहै। जिसकी प्राचीन राजधानी अयोध्यामें रही। और अयोध्या छूटने पीछे लवपुर(लाहौर)वा वल्लभी पुरमें रही।

वल्लभीपुरके अन्तिम राजा शिलादित्यपर शत्रुओंने आक्रमण किया जो गूजर कहेजाते हैं, राजा शिलादित्य उस युद्धमें मारे गये और उनकी गर्भवती राणी पुष्पावती आबू पर्वतकी उपत्यका (निकटकी भूमि) में देवी अंबिका (अंबाजी) के दर्शन करनेके लिये आई थी सो उसने भगकर ईडरके पर्वतोंमें प्राण-बचाये जहां उसके गुहनामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसे गुहादित्यभी कहते हैं और उन्हींके नामसे इस वंशको 'गुहिलोत' (गुहिल पुत्र) कहते हैं।

राजा गुहिलसे लगाकर महारावल बापातक सात राजा हुए जिनके नाम ये है।

---

(१) प्रायः ऐतिहासिक विद्वान् लोग उक्त वंशको कुशसे भी मानते हैं।

(२) सन् १९०६ से लेकर "खड्गविलास" प्रेस बांकीपुरसे "टाड् राजस्थान" का हिन्दी अनुवाद मासिकपत्रके रूपमें प्रकाशित होता है। उसके प्रथमवर्षकी ९ वीं संख्यामें उक्त अनुवादके सम्पादक प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् पं०गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने पृष्ठ३१७वें पृष्ठके सिरेपर १३ नंबरका टिप्पण लिखा है सो नीचे लिखा जाता है—सन् १९०२ में हमने टाड् साहिबका जीवनचरित लिखा, उस समय तक टाड् साहिबके लेखानुसार हम भी यहही मानते थे कि मेवाडके राजा "वल्लभी" के खानदानसे निकले हैं. परन्तु उसके पीछेके शोधसे कितने एक प्रमाण ऐसे मिले जिनसे पायाजाता है कि मेवाडके राजाओंका वल्लभीके राजाओंसे कुछभी सम्बन्ध नहीं है मेवाडमें गुहिल वंशका राज्य स्थापन करनेवाला गुहिल वा गुहदत्त गुजरातके आनन्दपुरनामक नगरसे आया था ऐसा लिखा मिलता है।

१ गुहिल वा गुहादित्य
२ भोज
३ महेन्द्र
४ नाग
५ शील
६ अपराजित (ये वि० सं० ७१८ में विद्यमान थे)
७ बापा (महेन्द्र) ने (वि० सं० ७९१ में चित्तौड़ मोरी चहुवानसे विजय किया और वि० सं ८१० नागदा नगरमें समाधि ली)

[नोट—जिन राजाओंके शक संवत् नहीं मिले न जिनकी कविता उपलब्ध हुई उनके केवल नामही देदिये हैं और जिनके संवत् मिले हैं वे उनके नामके आगे देदिये हैं और जिनकी कविता मिली है उनकी कविता और इतिहास आदि भी लिख दिये हैं यह बात सर्वथा असंभव है कि गुहिल और भोज जैसे वीर और वदान्य राजाओंको कवि भूल गये हों पर अभाग्य वश हमको उनकी कविता प्राप्त नहीं हुई संभव है कि किसी पुस्तक विशेषमें न लिखे जानेके कारणसे लुप्त होगई हो इसी लिये हमने इस पुस्तकका संग्रह कियाहै कि इस समय तक जो कविता प्राप्त है वह तो लुप्त न हो जाय।]

महारावल श्रीबापा।

रावल महेन्द्रने 'जिनका उपपद बापा था, क्योंकि संसार इन्हें पिता मानता था, मोरियोंसे विक्रमी संवत् ७९१ में

१ यहां ७ नंबर पर पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने अपनी टाड राजस्थानकी टिप्पणीमें पृ० नं. ३२१ में "महेन्द्र" दूसरा लिखकर बापाको ८ नंबर लिखा है।

चित्तौड विजय किंया और संवत् ८१० में नागदा नगरकी सीमामें समाधि ली वह स्थान श्री एकलिङ्गेश्वरकी पुरीके समीप उत्तर दिशामें अब भी बापारावलके नामसे प्रसिद्ध है इनके पिताका नाम अपराजित था भोज इनसे पांच पीढ़ी पहिले हुए थे.

गीत (१) महारावल श्रीबापाजीका।

पूरबजां तणी म्रजाद न पलटी,
पहलां लें हींदू प्रबल ॥
बसूं जीत सायरां बिचाले,
बापे लीधी आप बल ॥ १ ॥
मोरी मारलिया मेवाड़े,
भांमी भोजतणा बलभीम ॥
रामलीह लोपी नह रावल,
सात समँद बिच कीधी सीम ॥ २ ॥
जिका सत्र लोपी नह जावे,
क्षत्रियांगुर तां अडग खंमी ॥
बापे लीधी आपणणें बल,
जोजन कोड़ पचास जमीं ॥ ३ ॥

गढ गढ पत गाजें गहलोतां,
कुळ सारांमें येम कह्यो ॥
समँद्रां परें न गो दससँहँसो,
राम बाणैरे मांह रह्यो ॥ ४ ॥

[नोट–सोदा बारहठ कृष्णसिंहजीका मत है कि यह गीत बापाके समयका बना हुआ नहीं प्रतीत होता किसी कविने पीछेसे बनाया है ।]

टीका–महाराणा बापाने अपने१ पूर्वजोंकी मर्यादा नहीं छोड़ी। किन्तु प्रबल बापाने २ सागरोंके ३ मध्यकी ४ भूमिको अपने बलसे जीतली ॥ १ ॥ हे अतुल बलशाली भाभी अर्थात् ५ न्यौछावर करने योग्य मेवाड़पति बापा ! तैंनें मोरियोंका नाश करडाला । हे रावल ! तैंनें ६ रामचन्द्रकी मर्यादाको नहीं तोड़ी और सात समुद्रोंके बीचमें अपने राज्यकी सीमा नियत करली ॥ २ ॥ क्षत्रियोंमें गुरु अर्थात् श्रेष्ठ बापाने ७ उस ८ नहीं हटनेवाली मर्यादाको ९ सहनकी और अपने बलसे पचास कोटि योजन पृथ्वी लेली ॥ ३ ॥ १० दश हजार गामोंके पति गहलोत वंशी बापाने अनेक गढ़ और गढ़पतियोंका गर्व गंजन किया अर्थात् जीतलिये। और समुद्रोंके पार नहीं गया मानों रामबाणकी जो मर्यादा है उसके इस पारही रहा नहीं तो बापा समस्त भूमण्डल ले लेता। भाव यह है कि बापाने पचास कोटि योजन भूमिही ले ली ॥ ४ ॥

मनोहरम् (२)

धारि कठिनाई धीर गुरुकी चराई धेनु,
इष्ट वर पाय पुनि पूर निधि पाई तैं ॥
विक्रमाब्द इन्दु नन्द द्वीप मानमोरी मारि,
चित्रकूट राजधानी जबर जमाई तैं ॥
खुरासान आदिक घमंडी दूरदेशी घाय
पाइ प्रभुताई सुख नीति सरसाई तैं ॥
बीरबर ! बापा ! यों बिथारि निज बाहुबल,
आसमुद्र छोनी एक आतपत्र छाई तैं ॥

[**नोट**—यह कवित्त महाराणा श्रीफतहसिंहजीने बापा-रावलकी तसवीरपर लिखानेके लिये बारहठ कृष्णसिंहजीसे बनवाया।]

टीका—धीर बापा ! तैंनें दृढता धारण करके १ गुरु "हारीत" ऋषिकी गाय चराई। और उनसे वरदान २ पाकर तैंनें पूर्ण निधि (सम्पत्ति) पाई। ३ विक्रम संवत् ७९१ में मोरियोंको मारकर हे बलवान् ! तैंनें ४ चित्तौड़की राजधानी जमाई। खुरासान आदिक घमंडी विदेशियोंको ५ मारकर और प्रभुतापाकर तैंनें सुखनीति सरसाई। हे बीरबर बापा! इस प्रकार अपने बाहुबलको बिथारि अर्थात् विस्तार करके ६ समुद्र पर्यन्तकी ७ पृथ्वीको एक ८ छत्रसे छाई अर्थात् अपने अधिकारमें करली ॥

बापा और गढ लक्ष्मण सिंहके बीचमें ३७ राजा हुयेहैं इनके विषयकी भी कोई कविता हमको उपलब्ध नहीं हुई

(१) पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा महारावल बापा और गढ-लक्ष्मणसिंहजीके बीचमें होनेवाले राजाओंकी संख्या ३७ से अधिक मानते हैं। वे अपने सम्पादित "टाडराजस्थान" वर्ष १ संख्या ९ के ३२१ वें पृष्ठमें लिखते हैं कि——आजतकके शोधके अनुसार शुद्ध कीहुई गुहिलसे राणा हमीरसिंह तककी मेवाडके राजाओंकी वंशावली——(बापा तककी वंशावलीमें विशेष भेद नहीं है इसलिये बापाके आगेसेही वंशावली लिखी जाती है। यद्यपि महाराणा गढ-लक्ष्मणसिंह तकही इस वंशावलीका उल्लेख करना आवश्यक है तथापि राणा हमीरसिंह तककी पीढियोंमें विसंवाद (न मिलना) पाया जाता है इसलिये हमीरसिंह पर्यन्तकी पीढियोंका उल्लेख कियाजायगा। इस क्रममें सत्यासत्य निर्णय करना सुयोग्य पाठकोंके विचारपर निर्भरहै।)

८–कालभोज (बापा)–मेवाडका प्रसिद्ध राजा बापा या बापारावल यहही होना चाहिये, जिसको डूंगरपुर इलाकेसे मिलेहुए कितने एक शिला लेखोंमें खुम्माणका पिता लिखा है, और ऐसा ही मेवाडकी ख्यातोंमें लिखा मिलता है. राणा रायमल्लके समयके "एकलिङ्गमाहात्म्य"से पाया जाता है कि उसने विक्रम सं० ८१० (ई० स० ७५३) में राज्य छोडा था।

९–खुम्माण

१०–मत्तट

११–भर्तृभट

१२–सिंह

१३–खुम्माण (दूसरा)

१४–महायक

और न शक संवत् हस्तगत हुए अतः केवल नामही लिख देते हैं ॥

१५–खुम्माण (तीसरा)

१६–भर्तृभट (दूसरा)–इसकी राणी महालक्ष्मी राठौड़ वंश की थी जिससे अल्लटका जन्म हुआ था।

१७–अल्लट–इस राजाके समयका शिलालेख वि० सं० १०१० ई० स० ९५३) का मिला है। इसकी राणी हरियादेवी हूण राजाकी पुत्री थी.

१८–नरवाहन–इसके समयका एक शिलालेख वि० सं. १०२८ (ई० स० ९७१) का मिला है. इसकी रानी चौहान राजा जेजयकी पुत्री थी।

१९–शालिवाहन–

२०–शक्तिकुमार–इसके समयका एक शिलालेख वि० सं० १०३४ (ई० स० ९७७) का मिला है।

२१–अंबाप्रसाद

२२–शुचिवर्मा.

२३–रनवर्मा.

२४–कीर्तिवर्मा.

२५–योगराज.

२६–बैरट.

२७–हंसपाल.

२८–वैरिसिंह.

२९–विजयसिंह–इस राजाका विवाह मालवाके प्रसिद्ध परमार राजा उदयादित्यकी पुत्री श्यामलदेवीसे हुआ था, जिससे आल्हणदेवी नामक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसका विवाह हैहयदेश

१ कालभोज
२ खुम्माण

* चेदी-(कलचुरी)-वंशी राजा गयकर्ण-देवसे हुआ था. राजा विजयसिंहका एक ताम्र-पत्र विक्रम सं० ११६४ (ई० स. ११०७) का मिला है।

३०-अरिसिंह
३१-चौंडसिंह
३२-विक्रमसिंह
३३-रणसिंह या करणसिंह-इस राजासे दो शाखा फटीं.

रावल शाखा.	राणा शाखा.
३४-क्षेमसिंह	राहप
३५-सामन्तसिंह	नरपति
३६-कुमारसिंह	दिनकर
३७-मथनसिंह	जशकरण
३८-पद्मसिंह	नागपाल
३९-जैत्रसिंह	पूर्णपाल
४०-तेजसिंह	पृथ्वीपाल
४१-समरसिंह	भुवनसिंह
४२-रत्नसिंह	भीमसिंह
	जयसिंह
	लक्ष्मणसिंह

लक्ष्मणसिंह
अरिसिंह — अजयसिंह

अरिसिंह
४३ हमीरसिंह

३ भर्तृभट
४ सिंह
५ अल्लट (विक्रमी संवत् १०१० में विद्यमान थे)
६ नर वाहन
७ शालि वाहन
८ शक्ति कुमार (वि. सं. १०३४ में विद्यमान थे)
९ महारावल शुचिवर्मा
१० " नर वर्म्मा
११ " कीर्ति वर्म्मा
१२ " वैरट
१३ " वैरिसिंह
१४ " विजयसिंह
१५ " अरिसिंह
१६ " चौंडसिंह
१७ " विक्रमसिंह
१८ " क्षेमसिंह
१९ " सामन्तसिंह
२० " कुमारसिंह
२१ " मथनसिंह
२२ " पद्मसिंह
२३ " जैत्रसिंह (वि. सं. १२७० में विद्यमान थे)
२४ " तेजसिंह (वि. सं. १३२४ में विद्यमान थे)
२५ " समरसिंह (वि. सं. १३३० से १३४४ तक थे)
२६ " रत्नसिंह (वि. सं. १३५९ में विद्यमान थे)

२७	"	कर्णसिंह
२८	महाराणा	राहप
२९	"	नरपति
३०	"	दिनकरण
३१	"	यशकरण
३२	"	नागपाल
३३	"	पूर्णपाल
३४	"	पृथ्वीपाल
३५	"	भुवलसिंह
३६	"	भीमसिंह
३७	"	जयसिंह

---

(१) इनके लिये "वंशभास्कर" की चतुर्थराशिमें निम्नलिखित प्रकारसे उल्लेख किया है—

पादाकुलकम्।

"पहु इत चित्रकूट गढ भूपति, राना पृथ्वीमल्ल धर्मरति।
काशी पत्त ईश दर्शन कहँ, तनु रन तजिय जानि गोवध तहँ॥

सचरण गद्यम्।

पहिलेंहू याके पिता राना पुण्यपाल १ जाको पूर्णमल्ल १ हू कहैं ताने अरु याही पृथ्वीमल्लके पितामह नागपाल २ नेंहू विश्वेश्वरकी यात्रामें ऐसेही गोवधके निमित्त महा अवमर्दमें देह डारे। तैसेही राना पृथ्वीमल्लहू काशीपुरीके परिसरमें महारन रचि तनु तजत सुरभिनके सन्तापक सहस्रन म्लेच्छ मारे॥ ऐसे म्लेच्छनको मण्डल प्रतिदिन बलिष्ठ बनि आर्यावर्तमें थाना जमावत ठाम २ फैलि आर्यधर्मको ह्रास करत भयो। अरु इतको राना पृथ्वीमल्लको तनूज "भुवनाङ्ग" जाकों दूजे नाम करि भीमसिंहहू कहैं सो चित्रकूटको आधिपत्य धरत भयो॥"

महाराणा श्रीगढलक्ष्मण सिंहजी।

महाराणा गढलक्ष्मणसिंहजी कौनसे विक्रमी संवत्में जन्में और कौनसेमें गद्दी विराजे सो अनिश्चित है, इनका देहांत वि॰ सं॰ १३९० के समीप हुआ, दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुगलकके साथ वि॰ सं॰ १३९० के समीप इनका युद्ध हुआ जिसमें उक्त महाराणा अपने पुत्रों और भाइयों सहित काम आये॰

गीत (३)

तेरासै सँमत बरस इकतीसै,
जवन हींदवाँ हुवो जुद ॥
राणै वात अवींढी राषी,
तेरा पीढी झूड़ी तद ॥ १ ॥
गढलिषमण सारीसा गुडिया,
अड़सी कुल मंडण आरोड़ ॥
आया काम दिली दळ आतां,
चोरासी राजा चीतोड ॥ २ ॥
दीन अलाव फिरे गढ दोळा,
हर सिर माळ बणाव हुवा ॥
सात लाख झड खत्री सराँरा,
मेछ अठारा लाख मुवा ॥ ३ ॥

. रामायण भारथ विध राणां,
सूरां सुमिरण मरण तिसो ॥
साको कीधों गढ लिषमणसी,
अवर न साको हुवो इसो ॥ ४ ॥

[नोट—इस गीतके लिये ऐसाभी सुनाजाता है कि यह महाराणा गढलक्ष्मणसिंहके समयका बनाहुआ नहीं है। इसके संवत् और इतिहासमें भी मतभेद है, कि अलाउद्दीन और महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह समकालीन नहीं थे. संवत् १३५९ में अलाउद्दीन और रावल रत्नसिंहजीसे पाद्मनीके

(१) पं. गौरीशंकरजी हीराचन्द ओझाके मतानुसार इस गीतका इतिहास यद्यपि सही है तथापि सम्वत् तो भिन्नही है। पं. जी "टाड राजस्थान" प्रथम वर्ष संख्या ९ पृष्ठ ३१९ नोट नम्बर २३ म लिखते हैं कि—"राजा विक्रमसिंहके उत्तराधिकारी 'रणसिंह' से जिसको "करणसिंह" भी कहते थे दो शाखा फटी जिनमेंसे बडी रावल और छोटी राणा नामसे प्रसिद्ध हुई। रावल शाखामें चित्तौड़का अन्तिम राजा 'रत्नसिंह' हुआ जो अलाउद्दीन खिलजीकी लड़ाईमें विक्रम संवत् १३६० (ई० सन् १३०३) में काम आया, और चित्तौड़पर मुसलमानोंका अधिकार होगया, जिससे रत्नसिंहके वंशजोंने डूंगरपुरका राज्य स्थापन किया और वे वहीं रहे। राणा नामकी दूसरी शाखाका पहला पुरुष राहप हुआ, जिसका वंशज लक्ष्मणसिंह (गढलक्ष्मणसिंह) अलाउद्दीनके हमलेके समय रावल रत्नसिंहके पक्षमें लड़कर अपने सात पुत्रों सहित काम आया। उसके पौत्र हमीरसिंहने चित्तौड़का किला लेकर यहांपर फिर अपने वंशका राज्य काइम किया, तबसे राणा शाखावाले मेवाड़के स्वामी हुए॥ ऐसे गम्भीर ऐतिहासिक बिषयोंका निर्णय करना अत्यन्य दुःसाध्या है। पाठकगण जैसा योग्य समझें वैसाही स्वीकार करें॥

कारण युद्ध हुआ था और महाराणा गढलक्ष्मणसिंह मुह-म्मद तुगलकके युद्धमें संवत् १३९० के समीप काम आये थे जो ऊपर लिखआये हैं.]

टीका-संवत् १३३१ में मुसलमान और हिंदुओंमें युद्ध हुआ उस समय महाराणाओंकी तेरह पीढी काम आगई पर उन्होंनें अपना हठ न छोडा ॥ १ ॥ जिस युद्धमें महाराणा गढलक्ष्मणसिंह और कुलके भूषण कुमार अडसी (अरि-सिंह) सरीखे मारे गये और चीतौड़के मददगार अन्य चौरासी राजा दिल्लीकी फौज़के हाथोंसे काम आये ॥ २ ॥ अलाउद्दीनने गढके गिर्द घेरा दे लिया। और महादेवने भी मस्तकोंकी मालाका भूषण बनाया था। जहां सात लाख वीर क्षत्रिय और अठारह लाख म्लेच्छ (मुसलमान) मारे गये ॥ ३ ॥ महाभारत और रामायणकी तरहं स्मरण रखने योग्य यह वीरोंका संहार हुआ था, गढलक्ष्मणसिंहनें जैसा साका किया वैसा पहिले कभी नहीं हुआ था ॥ ४ ॥

मनोहरम् (४)

धाय्यन त्रिहायन लों सन्तत समर मंडि,
राखि रनथंभराज सौंपन समाह्यो नाँ ॥
साह्यो हठ बप्पवंस बिरुद बढावनकों,
रादनकों रीढा दै सिटावनकों साह्यो नाँ ॥
जात जान्यों जनन पै मन न मुरात आन्यौ,
वृत्तहिं निबाह्यो अपकीरति बिबाह्यो नाँ ॥

देखो रान लक्खन अलाउदीन अंतकुको,
ऐन दैन चाह्यो पर रैन दैन चाह्यो नाँ ॥
[महाकवि श्रीसूर्यमल्लजीकृत.]

[नोट-इस कवित्तका इतिहास सत्य नहीं प्रतीत होता क्योंकि उस समय रत्नसिंहजीका लक्ष्मणसिंहजीके शरण जाना प्रमाणसिद्ध नहीं है। संभव है कि, बडवा भाटोंके लिखानेसे ऐसा उल्लेख किया गया हो। इस सम्बन्धमें बारहठ कृष्णसिंहजीने वंश भास्करकी टीकामें बहुत कुछ लिखा है।]

ठीका-जिसने तीन वर्ष तक निरन्तर युद्ध करके घाई (निरंतर प्रहार) बजाई और रणथंभके राजा रत्नसिंहको शरण रखकर पुनः दे देना अंगीकार नहीं किया, जिसने बापाके वंशके विरुदको बढानेकाही हठ बनाया रक्खा और जो हठमें रावणसेभी आगे बढ निकला परंतु लज्जायुक्त कभी नहीं हुआ, जिसने अपने वंशके क्षय निश्चयपूर्वकजानलेनेपर भी मन नहीं मोडा, जिसनें (शरणागत वत्सल) व्रतकोही निबाहा, परन्तु अपकीर्तिके साथ विवाह नहीं किया, उस महाराणा गढ लक्ष्मणसिंहको देखो कि जिसनें अलाउद्दीन रूपी कालको अपना वरही दे देना चाहा परन्तु शरणागत रत्नसिंहको देना अंगाकार नहीं किया ॥

मन हरम् (५)

लक्खन त्रियक्खनके चक्खन निकारिबेकी,
लखो रांन लक्खनके चाली चित चालीको॥

काटे जिन गोधनके कंठ तिन कंठवारे,
कंधनकों काटे काटे कंध घटा वालीको ॥
क्रूर करनाल करवाल खितभाल भमें,
चिब्बुकलों श्रोनताल कांप्यो जियकालीको ॥
वक्रतुंड तुंड न वितुंडनके तुंडनमें,
मुंडनमें मुंड न लखात मुंडमालीको ॥

[स्वामि गणेशपुरीजीकृत]

टीका–लखों शत्रुओंकी आंखें निकाललेनेमें महाराणा गढ लक्ष्मणसिंहके मनकी हिम्मत बढी जिसको देखो कि जिसने गौओंके कंधे काटनेवालों (मुसलमानों) के कंठोंको कंधों सहित काट डाले और हाथियोंके कंधे भी काट डाले जिस युद्धमें भयंकर करनालें (वाद्य विशेष) बाजी और तरवारें पृथ्वीपर भमती थीं, जहां ठुड्डी तक लोहूका तालाब भरगया जिसमें हाथियोंके बहुतसे कटेहुए मस्तक देखकर इसमें कहीं गणेशकाभी मस्तक न हो ऐसी शंका करके कालीका हृदयभी कांप उठा । और जहां रणक्षेत्रमें पडेहुए मस्तकोंमें शिवका मस्तक नहीं दीखता था ॥

महाराणा श्रीअजयसिंहजी ।

महाराणा अजयसिंहजी किस संवत्में गद्दी बैठे सो अनिश्चित है, परन्तु वि. सं. १३९० के समीप महाराणा गढलक्ष्मणसिंहजी काम आये । और उस समय चित्तौडतो इनके अधिकारसे छूटकर मुहम्मद तुगलकके अधिकारमें हो-

गया था और कुछ प्रदेश कैलवाडाके समीपका केवल रह गया था सो वहां जाकर उक्त महाराणा गद्दी विराजे इसी-लिये इनको ' कैलपुरा ' कहते हैं, इनने चित्तौड़ लेनेकी बहुत कोशिशकी परन्तु हाथ नहीं लगा, इनका देहांत समयभी अनिश्चित है । इनका विशेष वृत्तान्त " वंश भास्कर " में लिखा है ॥

महाराणा हम्मीरसिंहजी ।

महाराणा हम्मीर सिंहजीका जन्म कौन विक्रमी संवतमें हुआ था सो अनिश्चित है, मुहम्मदतुगलकके उपरोक्त युद्धमें महाराणा गढलक्ष्मणसिंहजी सकुटुंब काम आये । और इनके छोटे पुत्र अजयसिंहजी घायल होकर बचगये जो कैलवाडा नगरमें जाकर मेवाडके सिंहासन पर बैठे । इनका देहांत हुए पीछे अजयसिंहजीके भतीजे और अरिसिंहजीके पुत्र महाराणा प्रथम हम्मीरसिंहजी गद्दी बैठे । और अनेक युद्ध करके थक गये परन्तु चित्तौड़ पर पुनः अधिकार नहीं करसके । तब आत्मघात करनेको द्वारका जाने लगे उस मार्गमें गुजरातमें खोड़नामक ग्राम मिला, जहां सोदा वारहठ शाखाके चारण वारूजीकी माता वरवडीजी रहते थे, जो शक्तिके अवतार थे । उनके पास जाकर महाराणाने अपना दुःख निवेदन किया तब माता वरवडीजीने महा-राणाको द्वारका जानेसे रोककर चित्तौड़ विजय करनेका वर दिया । तब महाराणा हम्मीरसिंहजी पीछे कैलवाडे

आगये। उस समय महाराणाके पास कुछ - सामग्री नहीं रही थी इसीलिये देवी वरवड़ीजीने अपने पुत्र बारूजीको ५०० घोड़े लेकर महाराणाके पास भेजा जिस सहायतासे महाराणा हम्मीरसिंहजीने संवत् १४०० के प्रारंभमें चित्तौड़ पर अपना अधिकार करलिया। और इन बरवड़ी माताका जिनका दूसरा नाम अन्नपूर्णा था चित्तौड़के किलेमें मन्दिर बनवाया जो अबतक वहां विद्यमान है । और महाराणा प्रतापसिंहजीने एक चबूतरा उदयपुरमें ब्रह्मपुरीकी तरफ बनवाया जहां अब भी नवरात्रिके दिनोंमें श्रीबरवडीजीके दर्शनार्थ महाराणा जाया करते हैं । इन सोदा बारहठ बारूजीको महाराणा हम्मीर सिंहजीने बहुत धन ग्राम और इज्जत देकर अपना पोळपात बनाया जिस विषयका यह निम्नलिखित गीत है। इन महाराणाका देहांत वि० सं० १४२१ में हुआ।

गीत (६)

बैठक ताजीम गाम गज बगसे,
किवरो मोटो तोल किया ॥
बड दातार हमैं बारूनैं,
दै इतरो बारठो दियो ॥ १ ॥
पोळ प्रवाह करे पगपूजन,
बड़ा अवास छोळ द्रव बेग ।

सिंधुँर सात दोय दस सांसण,
नागंद्रहै दीधा इम नेग ॥ २ ॥
सहँस दोय महिंषी अन सुरभी,
कंचन करेंहां भरी कतार ॥
रीझे दिया पांचसै रेवंतँ,
दस सहँसा झोका दातार ॥ ३ ॥
कोड़ पसाव पेष जग कहियो,
अधपत यों दाखै इण ओदें ॥
श्रीमुख सपथ करे अडसीसुत,
सोदां नह बिरँचै सीसोद ॥ ४ ॥

[सोदा बारहठ बारूजी कृत]

टीका–बैठक, ताजीम, ग्राम और हाथी वगैरह देकर कविका बहुत बडा १ सन्मान किया । और इतना देकर उस बड़े दातार २ हम्मीरसिंहने कवि बारूको अपना ३ पोळपात बनाया ॥ १ ॥ द्वारपर ४ चरण धोकर पैर पूजे और बड़े बड़े ५ मकानोंका भी रहनेके लिये ६ दान किया सात ७ हाथी और बारह ग्रामों सहित (पचीस हजार रुपये सालियाना आमदनीका आंतरीका) पटा, इस तरह ८ नागदाके पति (महाराणा) ने नेग बखशे ॥ २ ॥ दो हजार गाएं और ९ भैंसें और स्वर्णकी भरी हुई १० ऊंटोंकी कतार और फिर खुश होकर उस दस हजार ग्रामोंके पति

(महाराणा) बड़े दातारने पांचसौ ११ घोड़े भी दिये॥ ३॥ इस प्रकार क्रोड़ पसाव देकर महाराणाने अपने मुखसे यह १२ आज्ञादी कि मैं शपथ पूर्वक कहता हूं. कि इस वंशमें कोई शीसोदिया सोदा बारहठोंसे नहीं १३ बदलेगा ॥ ४ ॥

गीत (७)

ऐळा[1] चीतौड सहै घर आसी,
हूं थारा दोषियां[2] हरूं ॥
जणणी[3] इसो कहूँ नह जायो,
कहवै देवी धीज करूं ॥ १ ॥
रावळ बापा जसो रायगुर[4],
रीझ खीज सुरंपतरी सूंस[5] ॥
दससहँसा[6] जेहो नह दूजो,
सकती करै गळारा सूंसँ ॥ २ ॥
मन साचै भाषै महँमाया,
रसणा सहती बात रसाॅळ ॥
सरज्यो है अडसीसुत सरखो,
पकडे लाऊं नाग पयाळ ॥ ३ ॥
आलम कलमं नवैषँड एळा,
कैलपुरारी मींढ किसो ॥

देवी कहै सुण्यो नह दूजो,

अवर ठिकांणै भूप इसो ॥ ४ ॥

[सोदा बारहठ बारूजीकृत]

[नोट—यह गीत बरवडीजीके वरदान और आज्ञाके अनुसार उनके पुत्र बारूजीने बनाया है इस विषयमें " वंशभास्कर " का लेख दूसरे प्रकारसेभी मिलता है जिसका निर्णय पाठक जनोंकेही विचारपर निर्भर है]

चीतोड़की सब १ भूमि तुम्हारे घर आवेगी और मैं तेरे २ शत्रुओंका नाश करडालूंगी । देवी कहती हैं कि मैं शपथ करतीहूं कि, किसी ३ माताने महाराणा हम्मीरसिंह सरीखा नहीं जना ॥ १ ॥ जो बप्पा रावलके समान ४ राजाओंका राजा है और जिसकी रीझ और कोप ५ इंद्रके समान है, शक्ति अपने कंठकी ६ शपथ करके कहती है कि, ७ दश सहस्र ग्रामोंके पति (महाराणा) के समान अन्य नहीं है ॥ २ ॥ जिह्वाको शोभा देती हुई ८ सरस वार्ता महामाया सच्चे मनसे कहतीही है कि याद अडसी (अरिसिंह) के पुत्र (हम्मीरसिंह) के समान परमेश्वरने किसीको बनाया होतो मैं उसे पातालसे पकड लाऊं ॥ ३ ॥ ९ कलमा पढनेवालों (मुसलमानों) की दुनियांमें वा १० पृथ्वीके औरभी नवहीं खंडोंमें महाराणाकी बराबरी करनेवाला कौन है, देवी कहती है कि, मैंने तो अन्य ठिकानोंमें ऐसा राजा नहीं सुना ॥ ४ ॥

गीत (८)

हर हर तणा हमीर नरेसुर,
लाभ थका मूका रह लोय ॥
एकण आस तुहाली ऊपर,
सीसोदा आवै सह कोय ॥ १ ॥
जट धारी धारी जानोई,
कविताधारी कंथाधार ॥
मारग दस मेवाड नरेसुर,
वहै तुहालै बड दातार ॥ २ ॥
हर पँथ अघहर पंथ अहे हुय,
प्रभा हुवंती समोप्रवाह ॥
एक हमीर वहै कांकणिये,
आज तुहालै उतलै तियाह ॥ ३ ॥
उर्हव थयां नां कोई वह आवै,
सुरियण मारग अन्य सह ॥
मेक वहै अरसीह समोभ्रम,
प्रथी बिलग्गी तूझ पँह ॥ ४ ॥

टीका–शिवके अंशवाले महाराणा हम्मीर सिंह ! तेरी आशा करके सब लोग आते हैं और हे शीसोदिया ! जो

अपने लाभके लिये आते हैं वे १ लोग गूंगे रहते हैं अर्थात् उनको विना मांगे ही मिलता है ॥ १ ॥ हे बड़े दातार मेवाड़के पति महाराणा ! तेरे यहां दशों दिशाओंके मार्गोंसे जटाधारी (साधु), जनेऊधारी (ब्राह्मण,) कविताधारी (कवि) और कंथाधारी (संन्यासी आदि) सब आते हैं ॥ २ ॥ हे महाराणा ! तेरा यह दानका मार्ग शिवके मार्गके समान पाप हरनेवाला होगया है, और तेरे दानके प्रवाह के साथ तेरी क्रान्ति भी बढगई है,हे २ अतुल त्यागी हमीरसिंह ! आज यह उदारताका ३ मार्ग तेरेही यहां बहता है (यहां अतुल त्यागीके संबन्धसे उदारताका अध्याहार होता है) ॥ ३ ॥ तुह्मारे इस दानपे ४ त्याज्य हुये वे और सब (कृपण राजा) इस ५ देवमार्गमें नहीं आसकते. हे अरि सिंहकी समानता करनेवाले हम्मीरसिंह ! ६ एक तुम हीं इस मार्गमें बहतेहो सो हे ७ प्रभों ! (हमीरसिंह) यह पृथ्वी तेरे ही साथ लगी हुई है ॥ ४ ॥

गीत (९)

कुळ करसण करै बरीसण कोड़ी,
ढीके कनक मझ ढालड़िया ॥
अड़सी संभ्रम ठोड़ सिचै इम,
हम्म महादत हालड़िया ॥ १ ॥
परठी आभ गयण ळग पूंहतं,
कीरत बाड़ी मोर कळी ॥

सुतियागी आरत कर सींची,
फल किव बयणा सुफल फली ॥ २ ॥
बिमल प्रवाह गंग गोंम बासंह,
घणी कियारी कवत घणा ॥
संभरिया पात सोब्रनमें,
त्रहुं अण हात हमीर तणा ॥ ३ ॥
बाड़ँ लियाड़े उचत पांच बिध,
न्याय कनक कर मिर्सर नखै ॥
रोर वँराह समँद पैली रुख,
राम रँवा[१०] कर राम रखे ॥ ४ ॥

टीका—राणाहमीरसिंहने १कुळ खेती की. २ढींकली, चांच (जल निकालनेका यंत्र) से सोनारूपी पानी सींचा. ३ प्रतिष्ठित पाई, ४ पहुंचकर. ५ आकाशमें वास करनेवाली गंगा (आकाशगंगा) के प्रवाहसे. ६ याद किये. उस खेतीकी रक्षाके लिये पांच प्रकारकी ७ वाड बनाई. स्वर्णरूपी ८ खात डाला. इस खेतीको नष्ट करनेवाला ९ पापका मार्ग है सो समुद्रके परलीपार रहै. परमेश्वर इसे १० जारी रखकर इसकी रक्षा करै ॥

महाराणा खेताजी ।

महाराणा श्रीखेताजी विक्रमी संवत् १४२१ में पाट बैठे और १४३९ में बारूजी वारहठका वैर लेनेके कारण

हाडा लालसिंहजीसे लड़कर बुंदीमें काम आये थे। मेवाड़के इतिहासमें महाराणा खेताजीका गयामें यवनोंसे युद्ध करना नहीं पाया जाता पर यह गीत उसी समयका बनाहुआ सुना जाता है इसलिये ऐसा खयाल होता है कि इनके राज्यसमयके इन्हीं अठारह वर्षोंमें यह युद्ध हुआ होगा ॥

गीत (१०)

ओडंण पुड़ येक येक पुड असमेर,
हाते मूंठज हातै लिया ॥
कोप षुधारे थके तल काठां,
दांणव भांत नवी दलिया ॥ १ ॥
धर धूजवी धरापुड़ धुंवतै,
घरट घाय धण घेरविया ॥
रातमुखा गोहूं अर राणै,
आवध धारे ओरविया ॥ २ ॥
आणियां धार अनेक आवरंत,
पाड़े मूंठज पाण गया ॥
खडग पषाण खेडतै खेता,
थाट रवंद रण लोट थया ॥ ३ ॥

पड़ पकवान प्रवाड़ां प्रमरथं[11],
　　साहां सेन करे बीह संग ॥
मैदा कटक महारसे[12] मसले,
　　जीम्हण राण कियो रणजंग ॥ ४ ॥

टीका–यह जीमन याने खानेका रूपक है आटा घूंदनेके लिये पात्र चाहिये सो एक पुड तो १ ढालका और दूसरा पुड़ २ तलवारका है, तलवारकी मूंठमें हाथ है वही ३ मसलना है उसमें जिस तरह देवताओंने दैत्योंको पीस डाले थे (यह अध्याहार है) उसी प्रकार ४ क्षुधारूपी कोपमें ५ मुसलमानरूपी दानवोंको ६ काठे गेहुओंकी तरह तैनें पीसकर तल डाले ॥१॥ इस महाराणाने आयुध धारण करके अथवा आयुधोंकी धारसे ७ लाल मुखवालों (यवनों) को " दूसरे पक्षमें काठे गेहुओंको " ८ जलतेहुए पृथ्वीके पुटपर घरटमें गेहूंकी तरह ऊरे उस समय पृथ्वीभी धूजने लगगई ॥२॥ उस युद्धमें यवनोंकी कई ९ सेनाओंको महाराणा खेताने अपनी मूठके पराक्रमसे गयामें मारडाली और १० मुसलमानोंके कई झुंडोंको युद्धक्षेत्रमें अपनी तलवारके बलसे सुला दिया ॥३॥ उस महाराणाने केवल ११ परमार्थके लिये युद्ध करके बादशाही सेनारूपी मैदाको १२ रुधिरमें मसलकर उस युद्धमें पकान्नोंका वडा जीमन किया ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीलाखाजी ।

महाराणा लाखा विक्रमी सवत् १४३९ में मेवाड़के राज्य सिंहासन पर बैठे और संवत् १४५४ में इनका देहांत हुआ ॥

गीत (११)

पयदल नह पार सँख्या नह साहँण,
    कटक पयाणां रंभ किये ॥
मात कसी दूजा मंडलीकां,
    लाखो लियतो लंक लिये ॥ १ ॥
खोहँण कटक मिले खेतावत,
    साकुर सुभट इसै समदाव ॥
लागण हार होयतो लेवै,
    राकस रधँ मेवाड़ो राव ॥ २ ॥
हैदल कलल पायदल हूंकल,
    सीसोदै खडतैं सँनंढ ॥
गहके हो बीजांगढ पतियां,
    गँजै अगँजी त्रिकुट गढ ॥ ३ ॥

टीका–पैदलोंका पार ही नहीं है और १ घोड़ोंकी संख्या नहीं है इस तरहकी बड़ी सेना सहित जिसने २ प्रयाण किया है सो अन्य ३ राजाओंकी तो बातही क्या यदि महाराणा लाखा चाहै तो लंका भी ले सकता है ॥ १ ॥ जिसके ऐसी ४ समृद्धिवाले ५ घोड़े और सुभट हैं और जो एक ६ अक्षौहिणी सेना रखनेवाला है वह राणाखेताका पुत्र यदि लेना चाहै तो राक्षस (रावण) की ७ समृद्धि भी ले

सकता है॥२॥घोड़े और पैदलोंके रौरव शब्दके साथ मेदपाटेश्वर सीसोदिया ८ सज्जित होकर चलता है उस समय दूसरे कौनसे राजा इस बातका ९ गर्व करसकते हैं कि जो विजय नहीं किये जाने योग्य १० चीतोड़ गढको जीतें ॥ ३ ॥

[नोट-यह गीत पंखाला जातिका है जो तीन दोहोंका ही होता है ।]

गीत (१२)

प्रथीपुड़ सांकडों मेरहै कापड़ो,
वोहलों जास सुबास बहै ॥
मोटापणां तणों मेवाड़ा,
लाखा कवण प्रमांण लहै ॥ १ ॥
आयत इला अनैलपुड़ आयत,
समँद आयतां वलेज सात ॥
लाखां तेथ बँहाँचिया लाखै,
बडा बडा जुग रहसै बात ॥ २ ॥
यल़ न अनड ऊवहै आन का,
नैणां दीसै सहै नवाय ॥
यो करतार आवियो करतां,
मोटेरो मेवाड़ो राय ॥ ३ ॥

लाख वरीस महत तूं लखा,
तायक समन्नड कीजै ताय ॥
इल अणवूठै कसो अंबहर,
अनड़ अदठनै उहवै आय ॥ ४ ॥

टीका–पृथ्वीका पुड़ छोटा है और सुमेरु पर्वत भी पृथ्वी का एक १ टुकड़ा है और महाराणाका २ यश बहुत दूर तक चला गयाहै इसलिये हे लाखा ! तुम्हारे बड़प्पनका प्रमाण कौन लेसकताहै ॥१॥ पृथ्वी छोटीहै और ३ पर्वतोंका पुट भी छोटाहै और समुद्र छोटे होने पर भी केवल सातही हैं परंतु महाराणा लाखाने तो लक्षावधि द्रव्य ४ बांट दिया है सो यह वार्ता अनंत युग तक रहेगी॥२॥पृथ्वी और पर्वत सब नमे (झुके) हुए और छोटे दीखतेहैं परंतु परमेश्वरकी सृष्टिमें एक मेवाड़का राजाही बडा होकर आया हुआ दीखताहै॥३॥हेलाखों रुपये देनेंवाले लाखा तू बड़ाहै तेरी बराबरी कौन करै, जो पृथ्वीपर नहीं बरसता वह मेघ किस कामका ।

महाराणा लाखाजीके ज्येष्ठ पुत्र राव चूंडाजी ।

राव चूंडाजी लाखाजीके ज्येष्ठ पुत्र होनेके कारण यद्यपि गद्दीके हकदार थे परन्तु केवल इसी कारणस इन्होंने जानबूझ कर गद्दीका हक छोड दिया था कि एक दिन दर्बारमें महाराणा लाखा अपने राजकुमार चूंडा सहित बैठे थे तो मारवाड़के राजा रिड़मलजीने चूंडाजीके साथ अपनी पुत्रीका

संबन्ध करनेके लिये टीका भेजा इसपर लाखाजीने कहा कि हम भी जवान थे तब हमारे लिये भी योंही टीके आया करते थे इसपर चूंडाजीने यह समझकर कि यह शादी करनेकी मेरे पिताकी इच्छा है शादी करनेसे इनकार करदिया और बोले कि मेरे पिताकी जिस राजकुमारीसे शादी करनेकी इच्छा है वह तो मेरी माता है इसपर लाखाजीने इन्हें बहुत समझाया कि मैंने इस इच्छासे नहीं कहा केवल प्रस्ताव आनेसे कहदिया था पर उन्होंने एक न मानी लाचार टीका वापस भेजनेमें रिड़मलजीका अपमान होता देख महाराणा लाखाने विवाह करना स्वीकार किया इसपर रिड़मलजीके भेजेहुए आदमियोंने उज्रकिया कि हम महाराणा साहबको व्याहदें तो हमारा भानजा गद्दीका हकदार नहीं होसकता अतः यदि चूंडाजी यह लिख देवें कि गद्दीका मालिक हमारा भानजा होगा तब हम महाराणा साहबको व्याहसकते हैं इसपर चूंडाजीने खुशीसे यह अंगीकार किया जब महाराणाजीका विवाह होचुका तो कुछ अरसे पीछे उनके मोकलनामक पुत्र उत्पन्न हुआ, अंतमें महाराणाके देहांतके समय उनकी स्त्री सती होने लगी तब उन्होंने चूंडाजीको कहलाया कि मैं तो सती होती हूं तुमने अपने भाईको कौनसा परगना देना तजवीज किया है इसपर चूंडाजीने जवाब दिया कि मेरा भाई चित्तौड़का राजा है यह कहकर उसे राज्यसिंहासनपर बिठलाया और अपनी विमाताको निवेदन किया कि आप भी सती न होकर भाईकी बालक अवस्थामें राज्यकार्य देखते रहें । इस पीछे चूंडाजी मेवाड छोडकर मांडू चले गये जो राठोड़ रिडमलजीका उपद्रव होनेपर महाराणा मोकलजीकी

माताके बुलानेसे पीछे चीत्तौडमें आकर रिड़मलजीको मारा था धन्य है राव चूंडाको जिसने राज्यका हकदार होकर भी अपनेको व अपनी संतानको सदाके लिये राज्यसे वंचित रख अपने वैमात्रेय छोटे भाईको राजा बनाया और स्वयं उनके सामने प्रजा होकर रहने लगे वे नर पिशाच जो राज्यके लोभसे पिताकोभी मारनेमें संकोच नहीं करते उनको इस इतिहाससे शिक्षा लेनी चाहिये । राव चूंडाका यह इतिहास स्वर्णाक्षरोंमें लिखने योग्य है ॥

गीत (१३)

चालंतो कोट पयंपै चूंडो,
ऐ पुरसातन तणा अपर ॥
रण मुड़िये नांहीं जो आरण,
आगैं पीछैं मुड़े अर ॥ १ ॥
तोने रंग जसो चीतोडा,
बांचै बेदतणों बयण ॥
रहजो आप जूझ पग रोपे,
पडै क पग छाडै प्रसण ॥ २ ॥
लोह पगार कहै लाखावत,
गैमर हैमर जेथ गुड़ै ॥
मुंह रावत जो आप न मुड़िये,
मुड़आवै कै प्रसण मुड़ै ॥ ३ ॥

[नोट–मंडोवरके रिड़मलजीने जो चित्तौडपर कब्जाकर लिया था और चौंडेजीने मांडूसे अचानक आकर रिड़मल जीको मारकर चित्तौडपर अधिकार किया उस लडाईके विषयका यह काव्य है ॥

टीका–किल्लेपर चढाई करता हुआ चूंडा कहता है कि पराक्रमका यही अपार चिह्न है कि युद्धसे आप पीछा नहीं फिरै, शीघ्र अथवा विलंबसे शत्रुही मुडेगा ॥ १ ॥ हे चित्तौड पति ! तू धन्य है जो वेदका यह वचन पढता है कि युद्धमें अपनेको पैर रोपकर रहना चाहिये जिससे शत्रु यातो माराजावेगा या भगजावेगा ॥२॥ लाखाका पुत्र उस युद्धमें जहां घोडे और हाथी मारे जाते हैं वहां योंही कहताहै कि बहादुरको चाहिये कि पहिले खुद न भगै तो शत्रु यातो मुड जावेंगे या भग जावेंगे ॥

छप्पय ।

पत्र मंडि प्रच्छन्न दूत मंडू पठवायो ।
सुनि "चौंडा" सजि सेन, अद्ध रजनी गढ आयो ॥
करि हल्ला चढि कोट धस्यो, वीराधिवीर बल
कुँवर जोध भाजि कढिग, मारि लीन्हो नृप रनमल
सुकलहिं पट्ट गद्दी अरपि, रहि तटस्थ जग जस लियउ । हिंदवान ! बत्त धारहु हृदय, करहु जेम चौंडा कियउ ॥

[महाकवि सूर्यमल्लजी "वंशभास्कर" ।]

टीका—चौंडाजीकी विमाता॰ राठौड़ने पत्र लिखकर गुप्त रूपसे उनके पास मांडूमें भेजा कि जहां वे निवास करते थे। पत्र बांचतेही चौंडाजी कुछ सेना लेकर चित्तौड़ आये और अर्द्ध रात्रिके समय बडी वीरताके साथ दुर्गमें प्रवेश किया। और राठौड़ महाराज रनमलजीकों वहांहीं परलोकवासी किये उस समय कुंवर जोधाजी भागकर निकल गये! पश्चात् चौंडाजीने अपने विमातृज (सौतेला) छोटे भाई मोकलजीकों राजगद्दीपर बैठाये और स्वयं तटस्थ रहकर निरुपम यशके भागी हुए। हे आर्य जनों! इस पवित्र चारित्रपर ध्यान लाओ और चौंडाजीके सदृश सत्कार्योंमें प्रवृत्ति करो।

महाराणा श्रीमोकलजी।

महाराणा मोकलजी विक्रमी संवत् १४५४ में गद्दी बिराजे, जहाजपुरके मुकाम पर फीरोजशाहके साथ इनका युद्ध हुआ जिसमें उसको पराजित होकर भागना पड़ा, यह फीरोजशाह नागोरवाला फीरोजखां मालूम होताहै, ये महाराणा विक्रमी संवत् १४९० महाराणा लाखाके पासवानिये पुत्र चाचा और मेराके हाथसे दग़ासे मारे गये॥

गीत (१४)

रणजीत कटक कै ऊपर राणा,
वाजंतै कै ऊपर वल्या॥
धर धरपती छत्र पत्र धजपत,
मोंकल़ पावां आय मल्या॥ १॥

लेवाकै थानक लाषावत,
घण समदाये सेन घणा ॥
चलणै तलक तुहालै चोहट,
मोकल सह मंडलीक तणा ॥ २ ॥
अन अन खंड तैणां सह अधपत,
खलजे खपिया. तूझ खग ॥
माथो जिये नमायो मोकल,
पाट बैसतै समो पग ॥ ३ ॥

टीका-हे महाराणा यह विजय करनेवाली सेना किसके ऊपर चढती है और ये नगारे आज किसपर बजते हैं इस पृथ्वीपर तो जितने छोटे और बड़े राजाहैं वे सबतो तेरी शरणमेंही आगयेहैं॥ १॥हेलाखाके पुत्र महाराणा! राजा तो सब तेरेही तिलक करनेसे चलतेहैं (राजा होतेहैं) फिर यह इतना वडा सेना समुदाय कौनसा राज्य विजय करनेके लिये तैयार किया जाताहै॥२॥हेमोकल! आर्यापर्वतके सिवाय अन्य खंडोंके राजा तो तेरी तलवारसे नष्ट होगये केवल वेही बचेहैं जिन्हों ने गद्दी बैठते समय तेरे पैरोमें शिर झुकालिया ॥ ३ ॥

गीत (१९)

ईषे ढेलड़ी नासपुर नासै,
भटनेरो भड़वायो ॥

कलमां कालव ग्रहणे कोटां,
ईषे मोकल आयो ॥ १ ॥
मेवट कोटे रांय मेलणो,
साहण सेन सवायो ॥
लोदां तार कहै लाषावत,
ऊगै दीहत आयो ॥ २ ॥
संभर ससत डँडे डिडवाणो,
भट नर पडे भगाणा ॥
राणां तूझ भये रेयांणां,
थर हरिया सह थाणा ॥ ३ ॥

टीका–१ दिल्ली. आगे नगरोंके नाम हैं. २ मुसलमान. ३ घोड़ोंकी। ४ लोदी जातिके यवनोंका। ५ वंश। ६ मुसलमानोंके॥

महाराणा श्रीकुंभा।

महाराणा कुंभा विक्रमी संवत् १४९० में गद्दी बैठे और संवत् १५२५ में अपने कुलकलंकी ज्येष्ठ पुत्र ऊदाके हाथसे मारेगये जो राज्यके लोभसे पिताको मारकर गद्दीपर बैठ गया। ये महाराणा बडे यशस्वी वीर विद्वान और प्रतापी हुए जिन्होंने कुंभलगढ और आबूपर अचल गढ आदि स्थान बनवाये और मालवाके बादशाह मुहम्मद तुगलकको युद्धमें परा-

(१) यह गीत सरल है सो कठिन शब्दोंका अर्थ दे दिया है।

जित करके पकड लाये और छः महीनेतक कैद रखकर उससे कुछ दंड लेकर छोडा और इसका स्मारक चिह्न चित्तौडके किलेमें एक बडा कीर्तिस्तंभ बनवाया जो अबतक विद्यमान है, इसीतरह गुजरातके बादशाह कुतुबुद्दीनको भी इन महाराणाने युद्धमें पराजित किया, इत्यादिक अनेक वीरताके कार्य इन्होंने किये। सुना जाता है कि ये महाराणा संस्कृतके बडे विद्वान् थे।

गीत (१६)

रण सालै रूक केवियां राणा,
साझग लडत न सुणिया ॥
जइयो राम रुद्रायण जीहा,
भण तण पागल भणिया ॥ १ ॥
आनन रामराम सुण आणै,
अंतर आणै राम उर ॥
भोयँग मंडल लोह भणावण,
गोरिवै कुंभा प्राणगुर ॥ २ ॥
गढ लियंत गहलोत प्राणगुर,
सांईये सोगत पेख सह ॥
बायां बलण अबलण बाया,
गोबिँद गोबिँद साड गह ॥ ३ ॥

साषा बियो मयँक पह सुभ्रम,
मन अणबंछत तूझ मण ॥
कलम कुरांण पाण तज कुंभा,
बांचण लागा हर बयण ॥ ४ ॥
चटँडा हाट हाट चुग लालां,
सांट खडग ताय सोचरिया ॥
बहियो नहीं वे न तत बाहिया,
अनत कह्यो ते ऊगरिया ॥ ५ ॥

टीका—हे राणा! तुम्हारी तलवार युद्धमें १ शत्रुओंके सालती है इसलिये तुमसें लडता किसीको नहीं सुना। तुम्हारे विजयने शत्रुओंको अपनी जीभसें रामराम और २ शिव शिव रटाते रटाते पागल बनालिया ॥१॥ उनके मुखसे भी रामरामही सुननेमें आता है और हृदयमें भी रामही रहता है नागलोकमें भी शस्त्र शिक्षा देनेमें हे ३ गौरीपति! (शिव) रूप कुंभा तू बडा है ॥२॥ ४ ईश्वरकी गति देखकर. तेरा बचनोंका ५ बोलना पीछा नहीं फिरता ऐसा है इसलिये घमंडी और बलवान भी गोविंद गोविंद करने लगगये ॥३॥ हे कुलके अन्य ६ चन्द्रमा महाराणा कुंभा तेरे बडप्पनको अन्य राजा नहीं चाहते तथापि तेरा बडप्पन सबपर है जिस तेरे बडप्पनसे यवनलोग कुरानको छोडकर वेद पढने लगगये ॥ ४ ॥ वे ७ जिह्वाके लोभी अर्थात् हिंसक यवन हाट हाटसे रत्न चुगते. थे उनको

महाराणा कुंभाने तलवारके बदलेमें लेकर खालिये और वेद धर्म नहीं रहा वहांपर वे (यवन) भी शेष नहीं रहे केवल वेही बचे हैं जिन्होंने अनन्त (परमेश्वर) के नामका उच्चारण किया ॥

गीत (१७)

केकाण अरथ ऊतम कूंभकरन,
बसुधा ले अंता बह न ॥
कऴह म मांग पयंपै केवी,
मांग अवर बित जिका मन ॥ १ ॥
अथ लै राण अभालै अधकी,
भोग बियाप तणा मन भाव ॥
भूपत येता भलपण भणतां,
भारत हूंकारा न भराव ॥ २ ॥
संपत लै मोकऴसी संभ्रम,
धर संग्रह कर रीस धरो ॥
बिण हॅकणै संग्राम बैरहर,
कहै जिका बीजोस करो ॥ ३ ॥
साहणं समँद सेन सीसोदा,
राणां तोंसूं राय रिम ॥
अरथ बरीस करै सिर ऊपर,
कऴह बरीस न करै किम ॥ ४ ॥

टीका—शत्रु कहतेहैं कि हे कुंभकर्ण! घोडा, धन, भूमि जो चाहै सो ले परंतु अंतको मत वह अर्थात् मारै मत और युद्ध करना मत मांग ॥ १ ॥ हे महाराणा! बिना भाला हाथमें लियेही बहुत धन लेलै, और मन चाहीहुई भोगकी सामग्री भी लेलै, परन्तु हे पृथ्वीपति! इतनीसी भलपन दिखा कि युद्धके लिये हँकारा मत भरा ॥ २ ॥ बहुतसा धन लेलै और भूमिभी लेकर संग्रह करले परन्तु कोप न कर, हे मोकलके पुत्र! युद्धकी चढाई न कर जो तू कहेगा सोही करेंगे ॥ ३ ॥ हे घोडोंकी सेनाके समुद्र शीसोदिया कुंभा! तुझको शत्रु राजा कहतेहैं कि, मस्तक पर धनका दान करताहै तो युद्धका दान क्यों नहीं करता ॥ ४ ॥

गीत (१८)

कळ हेवा चूंक कुंभकन राणा,
जगत तणां गुर दुरंग जुळ
काढ्यां अचरज किसो कटारी,
काढ्या जिण पैंतीस कुळ ॥ १ ॥
सिवने बिसम लगै सुरताणा,
राव मेवाडो चढै रण ॥
बांक पडै क मंत्रै बाढाळी,
जग त्रय पार्धारिया जण ॥ २ ॥

सुजंडी मोकलसीह समोभ्रम-
ग्रहै बडा गढ डुरंग गह ॥
जिण बीनँडिया सु कम बिसारै,
प्रथमी नवषंड तणां पह ॥ ३ ॥
करत नहीं राणा कुंभक्रन,
जो तूं बलवंत बाथ जम ॥
मानवदेव दई मन मानत,
कलह कटारी तणों क्रम ॥ ४ ॥
आणी असह जड़ाली आहव,
फूटंती धोहमें फेर ॥
हुय तो कलह कुंभक्रन होये,
नतो असुर सुर नर अवर ॥ ५ ॥

टीका–हेराणा कुंभकर्ण ! १ युद्धमें ऐसेभी चूक होतेहैं कि जिनसे संसारके बडे गढ २ जुदे होजाया करतेहैं तो जिसने पैंतीस कुलोंको काढे (भगाये) उसके कटारीको काढने (निकालने) में क्या अचरजहै ॥ १ ॥ जिस समय मेवाड़का राजा युद्धके लिये चढताहै तो बादशाहोंको भी विषम लगने लगताहै, और वहांपर अपनी सेनापर झुकाव पड़तेही तीनों लोकोंके मनुष्योंको ३ सीधा बनादेने वाली ४ कटारी मंत्रता है ॥ २ ॥ हे मोकलके पुत्र! तुम्हारी ५ कटारीने बडे बडे वीरोंके और गढोंके ६ घमंड हर लियेहैं। और तुम्हारी इस

कटारीने नवही खंडके राजाओंको ७ विनयी (नमस्कार करनेवाले) वना दियेहैं, सो वे तुम्हें क्योंकर भूल सकतेहैं ॥ ॥ ३ ॥ हे यमराजकी भुजाओंके समान भुजावाले राणा कुंभकर्ण ! यदि तेरी सृष्टि नहीं होती तो मनुष्य और देवता आदि युद्धमें कटारीका क्रम क्योंकर जानते ॥ ४ ॥ तू युद्धमें किसीसे सहन नहीं हो सकनेवाली ८ कटारी लाया, सो भरे हुए पेटसे ९ ढाल फोड़कर पार निकल गई, अतः युद्धमें ऐसा (बहादुर) कुंभा राणाही है और राक्षस देवता या मनुष्य आदि दूसरा ऐसा नहीं प्रतीत होता ॥ ५ ॥

सुना गया है कि नागोरमें यवनोंका बहुत बडा थाना था। वहाँके यवन गौओंको मारते थे। इस कारण महाराणा कुंभानें चढाई करके उस थानेको काट डाला। उस पीछे एक दिन एकलिंगेश्वर महादेवके दर्शनार्थ गये। वहां एक गायने बैलके समान गर्जनाकी सो सुनकर महाराणा "कुंभलगढ" चले गये, और एक छप्पय छंदका चरण (कामधेनु तंडव करिय) कहा, और बारबार इसीको कहते रहे। इस तरह कई दिन निकल गये पर कोई जवाब न दे सका, जिससे सब लोग घबरा गये, परन्तु उस समय वहां कोई चारण नहीं था जो इस भावको समझता क्योंकि ज्योतिषियोंने महाराणासे कह दिया था कि आपकी मृत्यु चारणके हाथसे होवेगी, इस कारण महाराणा कुंभाने सब चारणोंको मेवाडसे बाहर निकाल दिये

थे, परन्तु मेवाडके उमराओंमेंसे एक सरदारके यह नियम था कि, वे चारणका मुख देखे बिना भोजन नहीं करते थे । इस कारण छिपे वेशमें उन्होंने एक चारणको अपने पास रख छोडा था । उसने उस सरदारसे कहा कि यदि मुझे ले चलो तो मैं महाराणा साहबका यह कहना छुडादूं । इसपर उस चारणको वे महाराणाके सन्मुख ले गये और उसने निम्न-लिखित छप्पय छंद बनाकर सुनाया। इसपर महाराणाने कहा कि, तू राजपूत नहीं है, कोई चारण प्रतीत होताहै परन्तु जो चाहै सो मांग मैं प्रसन्न हूं । इसपर उस असाधारण जाति-हितैषीनें निवेदन किया कि आपने बिना अपराध चारणोंको मेवाड़के बाहर निकाल दिये हैं, उन सबको पीछे बुलाकर उनकी जीविका उन्हें देवें । तब उक्त महाराणाने उन सब चारणोंको पीछे बुलाकर उनकी जीविकाएं उन्हें प्रदान करदी । वह छप्पय यह है–

छप्पय (१९)

जद धर पर जोवती,
देख मन मांह डरंती ॥
गायत्री संग्रहण,
द्रस्ट नागोर धरंती ॥
सुर तेतीसूं कोट;
आण नीरंता चारो ॥

नह खावत नह चरत,
मने करती हहकारो[३] ॥
कुंभेण राणा हणिया कलम[४],
आजस[५] उर डर उत्तरिय ॥
तिण दीह द्वार संकर तणैं,
कामधेन तंडव[६] करिय ॥

टीका–जब पृथ्वीकी तरफ देखती तो मनमें डरती, १ गौओंका २ नाश होनेके कारण नागोरकी तरफ देखा करती, तेतीस करोड देवता आकर वास डालते, पर न तो खाती और न चरती और मनमें ३ हाहाकार शब्द करती रहती परन्तु जब राणा कुंभाने ४ मुसलमानोंको मारडाला तब ५ आजसे उसका डर मिटगया इस लिये उसदिन शंकरके द्वारपर आकर कामधेनुने ६ गर्जनाकी थी ॥

महाराणा उदय करणजी।

उक्त महाराणा वि. सं. १५२५ में गद्दी बैठे, जिसके थोडे ही समय पीछे महाराणा कुंभाजीके कृपापात्र सरदार इनसे अप्रसन्न होगये जिनको दबानेके लिये उक्त महाराणाने सीरोहीके राजाको जो उस समय बहुत प्रबल होनेपर भी मेवाड़के अधीन था, सहायता मिलनेकी आशासे स्वतंत्र कर दिया यह सब देख कर सरदारोंनें इनके छोटे भाई रायमल जीको ईडरसे बुलालिया और उदय करणजीको शिकारके

मिस बाहर निकालकर किलेमें सं. १५३० में रायमलजीका कब्जा करा दिया । तब उदयकरणजी 'मांडू' चले गये और वहां उनपर बिजुली गिरी जिससे उनकी मृत्यु हुई लोग कहते हैं कि, यह उनको बापको मारनेका उचित दंड मिला था, सुना जाता है कि मेवाड़की पीढियोंमें पितृघातीका नाम नहीं लिखा जाता अतः संभव है कि इनका नाम भी मेवाड़की पीढियोंमें दर्ज न हो ।

महाराणा श्रीरायमल्लजी ।

ये महाराणा उदयकरणजीको भगाकर आप विक्रमी संवत १५३० में गद्दी पर बैठे और बडे दानी और वीर हुए, इन का देहांत सं० १५६५ में हुआ ।

गीत (२०)

चढे पूर पावस बंषै रायमल रण चढे,
नवो भाराथमें दीठ नमणा ॥
बहै बंनास तूं कायँ रातै बरण,
जळ अधक पूछियो गंग जमणा ॥ १ ॥
कोढ़ भड़ कचरिया रायमळ कोपिये,
जुड़ण मोटा करै कुंभ जायो ॥
रळतले रुधर रणभोम रहियो नहीं,
ऊपटे नदी जळ मांह आयो ॥ २ ॥

त्रंजड़ मेवाड़ रायजीप माळवतणा,
तुरक दल रहचियाँ रायमल़ तीर ॥
अर्सर घड़तोड़ ओहाल़ मुंह ऊतरे,
नदी नदियां मिळे रातड़ो नीर ॥ ४ ॥
हुवे हींदू घडासेन हूंबे हुवै,
मूझ उपकंठ सगराम मातो ॥
घणो सीसोदिये बहै श्रांई घड़ा,
रुधर घण मिळे तण नीर रातो ॥ ४ ॥

टीका–इधरसे वर्षा ऋतु चढी और इधरसे मांडूके बादशाहसे युद्ध करनेके लिये महाराणा रायमलने १ वर्षा ऋतुमें चढाईकी जिससे बनासका पानी लाल होगया इस कारण गंगा यमुना बनासको पूछती है कि तेरा रंगलाल क्यौं होगया इसका उत्तर बनास देती है २ नम्रहुई ३ क्यौं ॥ १ ॥ महाराणा कुंभाके पुत्ररायमलनें कोप करके बडे बडे४ युद्ध करके करोडों बहादुरोंको काटडाला, वह लोहू ५ बहकर रणभूमिमें नहीं रहा और बढकर नदीके जलमें चला आया ॥ २ ॥ मेवाड़के राजा रायमलनें अपनी ६ तरवारसे माल्वाके मुसलमानोंको मेरी तीरपर ७ काटा वह ८ रुधिर ९ छोटे नालोंमें उतर कर मुझमें आया इस कारण पानी लाल होगया है ॥ ३ ॥ १० दोनो सेना लडी और वह युद्ध मेरेही किनारेके ११ पास हुआ था, जिसमें, सीसोदिया महाराणाने बहुत १२ रुधिर बहाया, सो वह रुधिर मुझमें मिलकर मेरा पानी लाल होगया४॥

गीत (२१)

कर घातै मूंछ कहौ की ऊपर,
ठाकर बोरां बाद ठहै॥
राजकुलां पैंतीस रायमल,
करबा ओलग मेल कहै॥ १॥
कनक तुरी डंड लै कुंभावत,
रायां माल मकर मन रीस॥
मंडलवै मेवाड़ नरेसुर,
पाय बिलग्गा कुल पैंतीस॥ २॥
बल परहरै बना बध बोलै,
सनंस असा राखै धरसूत॥
राण तुहाली पोल रायमल,
राजधणी सेवै रजपूत॥ ३॥

टीका–जो १ अप्रगल्भ (चतुर नहीं) राजा हैं वे ही रायमलसे हठ करते हैं शेष क्षत्रियोंके पैंतीस ही कुल रायमलके साथ संधि करना स्मरण किया करते हैं॥ १ ॥ हे कुंभाके पुत्र रायमल! सोना घोडे आदि जो चाहै सो ले, परन्तु मनमें क्रोध २ मत कर. हे मंडलेश्वर मेवाड़के राजा! शेष पैंतीसही क्षत्रियोंके कुल तेरे पैरों लग गयेहैं॥ २॥ वे राजा लोग बलका दर्प छोड़ बैठे जो कि बढ़कर वचन बोलने वालेहैं। हे राणा